8

कभी न कभी हर किसी पर बुरा दिन आता है

(लूका 10:38-42)

कभी न कभी बुरा दिन हर किसी पर आता है। कुछ देर पहले मैंने एक राज मिस्त्री के बारे में पढ़ा था, जिस पर बहुत ही बुरा समय आया था। उसने कम्पनी को दुर्घटना की रिपोर्ट देने वाले फॉर्म में इस प्रकार भरा:

> बिल्डिंग के पास जाकर मैंने देखा कि तूफ़ान से छत के निकट से कुछ ईंटें निकल गई हैं। सो मैं एक चर्खी से बिल्डिंग के सिरे से एक बीम लेकर ईंटों से भरे दो टीन ऊपर चढ़ा दिए। टूटे भाग की मरम्मत के बाद काफी ईंटें बच गई थीं। फिर मैं नीचे जाकर रस्सी ढीली करने लगा। ईंटों का टीन मुझ से भारी था और मुझे पता ही नहीं चला कि वह कब नीचे आ गया और मैं ऊपर उठ गया।
>
> मैंने लटके रहने का निर्णय किया, क्योंकि छलांग लगाना बहुत मुश्किल था, परन्तु बीच में ईंटों का टीन नीचे आते हुए मुझ से टकरा गया। मेरे कंधे पर ज़ोर से लगा। फिर मैं ऊपर उठता गया, मेरा सिर उस बीम से लगा, मेरी उंगलियां छिल गईं और चर्खी के साथ रगड़ी गईं। ज़ोर से नीचे जा टकराने से टीन का तला टूट गया, जिससे ईंटें निकल गईं।
>
> अब मेरा भार उस टीन से भारी हो गया था जिस कारण मैं तेज़ी से नीचे की ओर आने लगा। बीच में आकर टीन ऊपर की ओर तेज़ी से आया और मेरी टांग की सामने वाली हड्डी रगड़ी गई। ज़मीन पर गिरते हुए मैं ईंटों के ढेर पर जा गिरा, जिससे मुझे काफी चोटें आईं। ऊपर से गिरता हुआ वह टीन मेरे सिर पर बिजली की तरह लगा। जिस कारण मुझे बेहोशी की हालत में अस्पताल पहुंचाया गया।
>
> कृपया मुझे बीमारी की छुट्टी दी जाए।

मैं अपने आप को इस मजदूर की जगह होने की कल्पना कर सकता हूं। हम चाहे कोई भी क्यों न हों, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि सब पर कभी न कभी बुरा समय अवश्य आता है।

बाइबल पढ़ते समय कई ऐसे लोगों के चित्र हमारे सामने आते हैं, जिनके जीवनों में ऐसे पलों को परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लेखकों द्वारा शीतकक्ष में सम्भाल कर रखा गया है। उन लेखकों ने उन क्षणों पर अधिक बल नहीं दिया, जो लोगों के पसंदीदा थे। हम समझ सकते हैं कि ऐसा होना स्वाभाविक ही है। हम सब की कभी न कभी बुरी तस्वीर खिंच जाती है, जैसे कि लाइसेंस या पासपोर्ट बनाते समय।[1]

लूका 10 अध्याय में से लिए गए इस पाठ में हम मारथा की एक तस्वीर का अध्ययन करेंगे,

जब उस पर बुरा दिन आया था।

मरियम और लाज़र की बहन मारथा के बारे में विचार करने पर आपके मन में क्या आता है? क्या आप के ध्यान में वह समय आता है, जब उसने यीशु से कहा, ''हां, हे प्रभु, मैं विश्वास कर चुकी हूं कि परमेश्वर का पुत्र मसीह जो जगत में आने वाला था, वह तू ही है'' (यूहन्ना 11:27)? नये नियम के प्रसिद्ध अंगीकारों में मत्ती 16:16 में दिए पतरस के अंगीकार की तरह यह भी एक है। क्या वह आप को यूहन्ना 12 अध्याय में अपनी बहन के साथ यीशु की संगति का आनन्द लेती लगती है। मेरा अनुमान है कि मारथा का नाम सुनकर हम में से कइयों का ध्यान मारथा के जीवन की इन बातों पर नहीं, बल्कि लूका 10 में लिखी बातों पर जाता है; जब उस पर बुरा दिन आया था।

जब मारथा पर बुरा दिन आया था

बड़े आनन्द से आरम्भ होने का दिन (आयतें 38, 39)

दिन का आरम्भ बहुत ही अच्छा हुआ था। वचन का हमारा पाठ ''फिर जब वे जा रहे थे'' (आयत 38) से आरम्भ होता है। यहां ''वे'' यीशु और उसके बारह चेलों को कहा गया है। यह घटना यरूशलेम की एक यात्रा के दौरान पलिश्तीन में यीशु की सेवकाई के अन्त में घटी ''तो वह एक गांव में गया'' (आयत 38)। यह यरूश्लेम से दो मील से भी कम दूरी पर जैतून पहाड़ की पूर्वी ढलान पर बैतन्याह गांव था (यूहन्ना 11)। यरूशलेम की ओर यीशु बैतन्याह में रुक गया, जैसे वह अक्सर रुकता था।

''और मारथा नामक एक स्त्री ने उसे अपने घर में उतारा'' (आयत 38)। मारथा तीन बच्चों अर्थात दो बहनों और एक भाई में से सबसे बड़ी होगी। शायद घर भी उसी का था। NIV में, ''मारथा ने अपना घर उसके लिए खोला'' लिखा है। उसने अच्छी मेज़बानी का नमूना पेश किया।

लूका ने इस कहानी को और आसान बना दिया है। उदाहरण के लिए उसने उसके भाई लाज़र का उल्लेख नहीं किया, जो वहीं होगा। न ही लूका ने चेलों की बात की, जो प्रभु यीशु के साथ जा रहे थे। यीशु को खाने पर बुलाए जाने के समय वे कहां चले गए थे। इस कहानी के बाद वाली आयत में फिर चेलों का उल्लेख है (लूका 11:1) अर्थात वे दूर नहीं गए थे। उन्हें भी मारथा ने आमंत्रित किया होगा।[2] लूका 10 में बताए गए खाने की दावत में *सोलह* लोगों को[3] आमंत्रित किया गया होगा। यदि आप स्त्री हैं तो अवश्य ही आप यह सोचते हुए सिर हिला रही होंगी कि सचमुच मारथा के लिए यह बहुत ही बुरा दिन होगा। ''सोलह लोगों के लिए खाना तैयार करना, कौन-सा आसान काम है!''

इस प्रकार कहानी का आरम्भ यीशु के अपने मित्रों के घर में प्रवेश करने के दृश्य से होता है। यीशु ने एक बार फिर कहा, ''लोमड़ियों के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं, परन्तु मनुष्य के पुत्र के लिए सिर धरने की जगह नहीं है'' (मत्ती 8:20)। परन्तु उसने चेलों को यह बताया कि यदि वे सुसमाचार के लिए अपने घरों को छोड़ते हैं तो उन्हें *सैकड़ों* घर मिल जाएंगे (मरकुस 10:29, 30)। ऐसे ही यीशु का कोई घर नहीं था, परन्तु पलिश्तीन के फैले हुए उसके *कई* घर थे, जैसे कि कफ़रनहूम में पतरस की सास का घर और बैतन्याह में मारथा का।

''और मरियम नामक उसकी एक बहन थी; जो प्रभु के पांवों के साथ बैठकर उसका वचन सुनती थी'' (आयत 39)। गुरु के ''पांवों में बैठना'' दोगुने महत्व का था। चेले आम तौर पर ध्यान से सुनने के लिए गुरु के कदमों में बैठते थे। इस वाक्यांश का अलंकारिक अर्थ भी था। इससे पता चलता था कि कोई फलां का *चेला* है। पौलुस ने लिखा है कि वह ''गमलीएल के पांवों के पास बैठकर पढ़ाया गया'' (प्रेरितों 22:3; KJV) था। बाइबल में मरियम की तस्वीर देखें, वह यीशु के पांवों में गिर पड़ी थी (यूहन्ना 11:32)। अगले पर्व पर यीशु बैतन्याह में था तो मरियम ने मुड़कर उसके पांवों पर इत्र डाला था (यूहन्ना 12:3)। रब्बी लोग आम तौर पर स्त्रियों को अपने पांवों को हाथ लगाने की आज्ञा नहीं देते थे; कई तो स्त्रियों को शिक्षा देने के योग्य भी नहीं मानते थे। यीशु के मन में ऐसी बात नहीं थी। इसलिए मरियम उसकी बात सुनने के लिए कदमों में बैठी थी।

अपने आप को जैतून के पहाड़ की पूर्वी ढलान पर बने छोटे से घर में ले जाएं। आप यीशु के चरणों मे बैठे उसकी बातें सुन रहे हैं। मुंह में पानी ला देने वाली खाने की सुगन्ध आती है, जिससे आप शीघ्र ही मिलने वाले स्वादिष्ट भोजन के बारे में जान सकते हैं (गांव का बच्चा-बच्चा जानता है कि मारथा खाना बहुत ही बढ़िया बनाती है)। चारों ओर सुगन्ध ही सुगन्ध है; शायद आत्मिक और सांसारिक आशिषों से परिपूर्ण है, सचमुच बहुत ही बढ़िया दिन है!

यदि हमारा व्यवहार सही है तो *हर दिन* विशेष हो सकता है। ''आज वह दिन है, जो यहोवा ने बनाया है; हम इस में मगन और आनन्दित हों'' (भजन संहिता 118:24)। मारथा की तरह हम भी प्रभु की संगति का आनन्द लेने के लिए उसे अपने घरों और जीवनों में बुला सकते हैं। उसने कहा है, ''देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं; यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा और वह मेरे साथ'' (प्रकाशितवाक्य 3:20)। कोई भी दिन, *आज का* दिन आपके और मेरे लिए महान हो सकता है!

एक दिन जो बुरा बन गया (आयत 40)

आयत 40 में मारथा का दिन बुरा बन गया। ''पर मारथा सेवा करते-करते घबरा गई'' (आयत 40)। NASB (न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबल) में, ''परन्तु मारथा अपनी तैयारियों से परेशान हो गई'' है।[4] यूनानी भाषा की क्रिया के अनुवाद का अर्थ है, उसने ''अपना ध्यान भटकने दिया।''

मारथा के घर एक ही कमरा होगा (उस समय में अधिकतर घरों में एक ही कमरा होता था) और मारथा एक ओर खाना बना रही थी, जबकि दूसरी ओर यीशु मरियम से बातें कर रहा था। यदि घर में एक से अधिक कमरे होंगे तौ भी जिस कमरे में मारथा थी और जिस कमरे में यीशु था, वे बहुत दूर नहीं होंगे।[5] खाना बनाते हुए मारथा यीशु की बातें सुन सकती थीं। ''परन्तु मारथा घबरा गई'' अर्थात उसका मन भटक गया।

हममें से कई लोग अपनी तुलना मारथा से कर सकते हैं। हम बाइबल क्लास या प्रार्थना में होते हैं। परमेश्वर का वचन सुनाया जा रहा है; परन्तु हमारे मन मारथा की तरह भटक जाते हैं कि खाने में क्या मिलेगा![6]

NIV में ''मारथा उन तैयारियों से जो उस ने की *थीं* दुखी हो गई थी'' है। उसे लगा था कि

सारी तैयारी उसे ही करनी पड़ेगी। ऐसा कोई संकेत नहीं मिलता कि यीशु ने खाना बनाने के लिए कहा हो, न ही इसकी कोई उम्मीद की थी। परन्तु मारथा ने सोचा कि खाना तैयार करना आवश्यक था। कई बार हमारे बुरे दिन हमारी व्यर्थ आशाओं के साथ आरम्भ होते हैं, जो दूसरों के मन में नहीं, बल्कि हमारे मन में होती हैं।[7] मुझे विश्वास है कि मारथा की नीयत गलत नहीं थी, वह यीशु के लिए खाना तैयार करना चाहती थी; वह बढ़िया से बढ़िया खाना खिलाकर यीशु की सेवा-टहल करना चाहती थी, परन्तु खाना बनाना आवश्यक नहीं ''था।''[8]

क्योंकि उसे लगा कि यह आवश्यक था, इसलिए वह यीशु के पास आकर कहने लगी, ''हे प्रभु, क्या तुझे कुछ भी सोच नहीं कि मेरी बहन ने मुझे सेवा करने के लिए अकेली ही छोड़ दिया है ? सो उससे कह कि मेरी सहायता करे'' (आयत 40)। मैं कल्पना कर सकता हूं कि मारथा इससे पहले मरियम को ''संकेत'' से बुला रही होगी। मैं उसको परात और बरतनों की टकराहट, अलमारी के दरवाज़ों को पटकते, मरियम की ओर आंखें घुमाते और ज़ोर-ज़ोर से शोर मचाते हुए कि ''मैं अकेली मेज़ पर खाना कैसे लगाऊंगी ?'' सुन सकता हूं।[9] मरियम ने उसकी बात को अनसुना कर दिया। यीशु की बात की ओर पूरा ध्यान होने के कारण हो सकता है कि उसे मारथा की बात सुनाई न दी हो।

यदि आप स्त्री हैं तो हो सकता है कि आप इसमें स्वयं को देख सकती हों। आपका घर रिश्तेदारों से भरा पड़ा है[10] और वे सब अतिथि कक्ष में बैठे बातें करते हुए हंस रहे हैं जबकि आप रसोई घर में अकेले उलझी हुई हैं। दुखी मन से आप चकित हो रही हैं, ''कोई यहां मेरी सहायता क्यों नहीं करता ?''

मारथा का धैर्य जवाब देने लगा और वह यीशु के पास आकर शिकायत करने लगी। बिलखती हुई बोली कि ''प्रभु जी आपको कोई चिंता नहीं ... ?'' हम सब वहीं थे। हमारा एक दिन बुरा था, हमारी योजना के अनुसार कुछ भी नहीं घटा। यदि हम ध्यान नहीं देते तो उसी चक्कर में फंस सकते हैं, जिसमें मारथा फंस गई थी: ''हे यीशु मैं इतनी परेशान हूं। *आपको ध्यान नहीं ?*''[11]

मारथा ने कहा, ''प्रभु जी आप को कोई चिंता नहीं कि मेरी बहन ने मुझ अकेली को सेवा-टहल करने के लिए छोड़ा है ?''''छोड़ा है'' से लग सकता है कि मरियम मारथा की सहायता कर रही *थी*; परन्तु फिर यीशु को देखने (हमारे शब्दों में) उसका ध्यान रखने के लिए उसको छोड़ गई। खाना तैयार करते हुए अतिथि को देखने जाना अच्छा मेज़बान होने की विशेषता थी, परन्तु मारथा में यह कमी पाई गई। वह गुस्से में थी, थकी हुई थी और रूठी भी। वह चाहती थी कि कोई और आकर सलाद काट दे ताकि वह मेज़ पर खाना लगा सके। ''प्रभु जी, उससे कहो कि मेरी सहायता करे।'' (शायद आपके बच्चे आ गए हैं और कहते हैं, ''मां *उससे कहो* कि छोड़ दे या पिता जी *उससे कहो* कि मुझे अकेला छोड़ दे!'')। मारथा मरियम को ही नहीं, बल्कि यीशु को भी डांट रही थी।

मारथा के अच्छे दिनों को बुरे दिनों में बदलने के लिए मैं नहीं जानता कि क्या कुछ हुआ, शायद मांस नहीं गल रहा था या रोटी बनाते-बनाते आटा गिर गया था, शायद रोटी जल गई थी, शायद इन सब बातों के अतिरिक्त उसका सिर दर्द से फटा जा रहा था। मुझे एक ही बात का पता है; जो भी हो रहा है, मारथा ने शिकायत करके स्थिति और भी खराब कर दी थी। आपके साथ कभी ऐसा हुआ है, जब हमारे बुरे दिन आते हैं तो हमारे मन में भी ऐसे ही उलटे विचार आते हैं

कि उससे हम अपने इर्द-गिर्द के लोगों का भी दिन खराब कर देते हैं।

हम ने एक सुखद घरेलू माहौल से आरम्भ किया, जिसमें यीशु परमेश्वर के वचन की शिक्षा दे रहा था; मरियम उसके कदमों में बैठी थी। खाने की खुशबू आ रही थी। कुल मिला कर दिन बहुत ही बढ़िया था। फिर दिन खराब हो गया, मारथा के घर में मायूसी छा गई क्योंकि मारथा को उन बातों की चिंता थी, जिनका कोई महत्व नहीं था।

अच्छे दिन को बुरे दिन में बदलना ठीक नहीं है। बस थोड़ी सी व्याकुलता ... थोड़ा सा स्वार्थ ... और फिर बिना विचार किए कुछ बातें कह देना काफी है। शिकायत के लिए अपना मुंह खोलने की आदत से हमारा अच्छा दिन बुरे दिन में बदल जाता है।

एक दिन जो बुरा हुआ फिर अच्छा हो गया (आयतें 41, 42)

दिन थोड़ी देर के लिए बदतर हो गया। मारथा ने यीशु को डांटा था और अब उसे डांट मिलनी थी।

> परन्तु प्रभु ने उसको उत्तर दिया, मारथा, हे मारथा, तू बहुत सी बातों की चिन्ता करती है और घबराती है। परन्तु एक बात अवश्य है, और उस उत्तम भाग को मरियम ने चुन लिया है: जो उस से छीना न जाएगा (आयतें 41, 42)।

मेरी बहुत इच्छा होती है कि पवित्र शास्त्र का वार्तालाप आडियो टेप पर हो, जिससे हमें अपनी शैली का पता चल सके। परन्तु मुझे नहीं लगता है कि हमें अनुमान लगाने की आवश्यकता है कि यीशु ने मारथा से किस ढंग से बात की। यूहन्ना 11:5 में लिखा है कि ''यीशु मारथा ... से प्रेम रखता था'' यीशु को कड़े सुर में डांटते पढ़ना लगभग असम्भव है। यह बात त्यौरियां चढ़ा कर सिर हिलाते हुए कहने की तरह है: ''मारथा ... हे मारथा। ...'' यीशु की बातों में निराशा थी, परन्तु प्रेम भी था।

''मारथा, हे मारथा तू बहुत वस्तुओं की चिन्ता करती और घबराती है।'' यूनानी शब्द का अनुवाद ''चिन्ता करती'' और ''घबराती'' के मूल शब्द का अर्थ चूरा हो सकता है। मारथा यह सोचते कि उसे क्या करना पड़ेगा ''चूरा हुई जा रही''[12] थी। वह अंदर से टूटी हुई थी और बाहर से भी यही लग रहा था। वह अपने इर्द-गिर्द लोगों का जीना दूभर कर रही थी।

यीशु ने कहा, परन्तु एक बात अवश्य है। कुछ टीकाकार मानते हैं कि यीशु द्वारा एक बात की आवश्यकता कहने का अर्थ यह था कि खाने से भरा एक बर्तन ही काफी होगा। मुझे लगता है कि यीशु खाने की बात कर रहा था, परन्तु हल्का सा खाना और मुस्कुराती मारथा सबके लिए प्रसन्नता का कारण बन सकती थी।

यीशु ने अगले शब्दों में एक ''बात'' का अर्थ बताया: ''मरियम ने तो वह अच्छा भाग चुन लिया है, जो उससे छीना न जाएगा।'' मरियम ने आत्मिक भाग चुन लिया था यानी मरियम ने अनन्त काल तक रहने वाली चीज़ चुनी थी। मरियम ने यीशु की बात सुनना चुना था। शारीरिक भोजन के मुकाबले उसका ध्यान आत्मिक खाने की ओर अधिक था।

हमारे बुहत से अच्छे दिन बुरे दिनों में बदल जाते हैं क्योंकि हम ''बहुत सी बातों की चिन्ता करते और घबराते हैं,'' जो आज हैं और कल नहीं होंगी, जिन्हें आज से दस-बीस साल बाद नहीं

पूछेगा। उन चीज़ों का ध्यान करने के बजाय जो सचमुच में महत्वपूर्ण हैं। कई बार हम उन वस्तुओं की ओर ध्यान लगाए रहते हैं, जो सदा नहीं रहती और परमेश्वर से अनन्तकालीन सम्बन्ध तोड़ लेते हैं।

इन वचनों का अध्ययन करते हुए मैं पिता और दादा होने के नाते यह बात अपने आप पर लागू करने से रोक नहीं पाया। अपने बच्चों के लिए मैं कौन सी वस्तु छोड़कर जाने को तैयार हूं? क्या यह सम्भव है कि नाशवान वस्तुओं को इकट्ठा करने में इतना उलझ जाऊं कि वह उनके लिए ''वह बात'' आवश्यक है, अर्थात परमेश्वर का वचन भूल जाऊं?[13]

फिर एक ऐसा दिन था, जो यीशु के मारथा को डांटने से और भी बुरा हो गया। एक अर्थ में उसने उससे कहा, ''खाना तो तुम किसी भी समय बना सकती हो, परन्तु मैं यहां थोड़ी देर ही हूं, यह अवसर न गंवाओ।'' हम सबको इस शिक्षा की आवश्यकता है। अपनी प्राथमिकताओं की खिचड़ी बनाना कितना आसान है!

मुझे यह भी विश्वास है कि वह दिन बदल गया, जब मारथा ने यीशु की बातों की ओर ध्यान दिया। मैं शेष दिन को इस प्रकार देखता हूं, पहले माहौल तनावपूर्ण था। मारथा ने खाना बनाकर परोस दिया था। यीशु ने खाने की तारीफ़ करके उसके मन को हल्का किया, परन्तु मारथा अपने प्रिय यीशु की बातें सुनकर दंग थी।

मैं दिन के शेष भाग को ऐसे देखता हूं कि इस घटना के बाद मारथा के जीवन में परिवर्तन आ गया। अगली बार मारथा को यीशु की सेवा करते हम यूहन्ना 12 में देखेंगे। इस बार मारथा ने फिर एक बड़ी भीड़ के लिए खाना बनाना था। इस बार भी मरियम ने उसकी कोई सहायता नहीं करनी थी, परन्तु मारथा ने शिकायत नहीं की। वास्तव में मारथा ने तब भी शिकायत नहीं की थी, जब मरियम ने महंगी इत्र की शीशी, जो परिवार की निधि थी, जिसे परिवार ने सम्भाल कर रखा था, यीशु के पैरों पर लगाने के लिए डाल दी थी। कई सप्ताह पूर्व ''एक बुरे दिन'' मारथा ने एक बात समझ ली थी, जो छीनी नहीं जा सकती थी!

बुरा दिन अच्छा बन जाता है, जब हम उसमें हुई बुरी बातों से *सीख ले लेते* हैं।

मारथा को तो अपने बुरे दिन का लाभ हुआ। मैं इस अध्ययन को बाइबल की छोटी एलबम में से मारथा की अगली तस्वीर दिखाए बिना बन्द नहीं करना चाहता। आइए मारथा के *अच्छे* दिन को देखने के लिए यूहन्ना 11 में देखते हैं।

जब यीशु लाज़र की मृत्यु के बाद बैतन्याह में आया तो मारथा ने उससे कहा, ''हे प्रभु, यदि तू यहां होता, तो मेरा भाई कदापि न मरता। और अब भी मैं जानती हूं, कि जो कुछ तू परमेश्वर से मांगेगा, परमेश्वर तुझे देगा'' (यूहन्ना 11:21, 22)। क्या विश्वास की यह अद्वितीय अभिव्यक्ति नहीं है? फिर आयत 27 के उसके शब्दों की ओर ध्यान दें, ''हां हे प्रभु, मैं विश्वास कर चुकी हूं, कि परमेश्वर का पुत्र मसीह जो जगत में आने वाला था, वह तू ही है।'' मैंने विश्वास किया है, सम्पूर्ण वाक्य है, जिससे संकेत मिलता है कि मारथा ने कालांतर में विश्वास कर लिया था और उसे अब पक्का विश्वास हो गया था। बाद में यूहन्ना ने लिखा है, ''यीशु ने और भी बहुत चिह्न चेलों के सामने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए। परन्तु ये इसलिए लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है: और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ'' (यूहन्ना 20:30, 31)। यूहन्ना ने वही शब्द इस्तेमाल किए जो मारथा ने किए थे। यूहन्ना ने यह समझाने के

लिए कि आपका और मेरा विश्वास कैसा होना चाहिए, मारथा को माध्यम बनाया!

बुरे दिन अच्छे हो जाते हैं, जब हम उनसे सीख लेकर शक्तिशाली बन जाते हैं! ऐसा होने पर उन बुरे दिनों पर ध्यान करके कहते हैं, ''परमेश्वर ने उन दिनों का इस्तेमाल मुझे सिखाने और मज़बूत करने के लिए किया!'' हम जान सकते हैं कि यीशु सचमुच परवाह *करता* है।

जब हमारे बुरे दिन होते हैं

बुरे दिन होने पर हमें क्या शिक्षा लेनी चाहिए? कुछ शिक्षाएं इस प्रकार हैं:

याद रखें कि सब पर कभी न कभी बुरा दिन आता है

पवित्र शास्त्र ऐसे विश्वासी पुरुषों और महिलाओं से भरा पड़ा है, जिन पर कई बुरे दिन आए। एलिय्याह पर बुरे दिन आए, परन्तु यह साहसी नबी बार-बार दुष्ट शक्तियों के विरुद्ध अकेला ही खड़ा होता रहा। फिर एक दिन निराश होकर एक गुफा में छिप गया और परमेश्वर से मृत्यु मांगने लगा (1 राजाओं 19)। एक और नबी पर भी बुरे दिन आए थे।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले पर एक बार बुरा दिन आया। बंदीगृह में डाले जाने के बाद उसने अपने चेलों को यीशु से यह पूछने भेजा, ''क्या आने वाला तू ही है, या हम दूसरे की बाट जोहें?'' (लूका 7:20)। उसके बाद ही यूहन्ना ने यीशु की ओर संकेत करके बड़े विश्वास से कहा था, ''देखो, यह परमेश्वर का मेमना है, जो जगत का पाप उठा ले जाता है'' (यूहन्ना 1:29, 36)। परन्तु बंदीगृह में अंधेरा, ठंड, सीलन और अकेलापन यूहन्ना का बुरा दिन था।

अपने बुरे दिनों के लिए *दूसरों* पर दोष लगाने की प्रवृत्ति से बचें

मारथा ने अपने बुरे दिनों के लिए मरियम और बाद में यीशु पर दोष लगाया। दूसरों पर आरोप लगाना मनुष्य का स्वभाव है, जिसका हमें विरोध करना चाहिए। बुरे दिन आने पर आम तौर पर ऐसी बुरी बातों से उतना बुरा नहीं होता, जितना उनके प्रति हमारी प्रतिक्रिया से होता है।

जान लें कि हमारे साथ होने वाली बातों के *परिणाम* भी मिलते हैं

मारथा ने तुरन्त यीशु को कहा, जिस कारण यीशु से उसे डांट पड़ी। जब हम होने वाली बुरी बातों पर नकारात्मक प्रतिक्रिया देते हैं; तो बुरा दिन और भी बुरा हो जाता है।

इस बात से शांति पाएं कि हमारे जीवन में बुरा दिन रहेगा नहीं, यदि हम इसे और बुरा न बनाएं

मारथा ने अपने बुरे दिन को अपने जीवन का अंतिम नहीं बनने दिया। इसलिए यूहन्ना 11 और 12 में मारथा का सुदर चित्र मिलता है। हमें भी अपने बुरे दिनों को कहानी के अन्त तक नहीं रहने देना चाहिए।

बुरे दिनों से सीखें कि वास्तव में क्या महत्वपूर्ण है

बुरे दिन आने पर रुककर पूछें, ''किस बात से यह दिन बुरा हो गया है? मेरी प्रसन्नता कौन

समाप्त कर रहा है ? कौन सी बात है, जिससे मेरे कारण मेरे इर्द-गिर्द के लोग दु:खी हैं ? कारण मिल जाने पर अपने आप से पूछें, भला सचमुच क्या है ? जब हम अपने साथ घटने वाली बातों से सीख लेते हैं तो बुरे दिन अच्छे हो जाते हैं।

सारांश

कभी न कभी बुरा समय सब पर *आता है*... परन्तु इस दिन को जीवन का सबसे बढ़िया दिन बनाया जा सकता है। यदि आप मारथा की कहानी से अपने जीवन में आत्मिक बातों को प्राथमिकता देने का महत्व सीख लें। एक बात महत्वपूर्ण है, जो आप से छीनी नहीं जा सकती है-वह है, प्रभु के प्रति आपका समर्पण। मुझे इस बात का पता नहीं है कि अब तक आपका दिन कैसा रहा है। परन्तु तुम इसे बढ़िया और सब से बढ़िया बना सकते हो, यदि यीशु के चरणों में बैठकर उससे सीखो और उसकी इच्छा को पूरा करने के लिए आप अपने मन को मज़बूत करें![14]

टिप्पणियां

[1]एक और उदाहरण जिससे अधिकतर महिलाएं परिचित हो सकती हैं, वह घर में बिखरी चीज़ें होने पर किसी के ''आ जाने'' पर यह कहना है कि ''आप गलत समय पर आए हैं!'' ''मेरा घर इतना गन्दा कभी नहीं होता है'' आदि। [2]बाद में, यीशु को बैतनिय्याह में एक भोज के लिए दावत दी गई, तब कहानी में चेलों का उल्लेख पहले नहीं था (यूहन्ना 12:1, 2)। परन्तु, यीशु के चेले भी वहां थे (यूहन्ना 12:4; मत्ती 26:8)। [3]मारथा, मरियम, लाज़र, यीशु और बारह चेले खाने के लिए इकट्ठे बैठे होंगे। [4]''तैयारी'' में केवल खाना बनाना ही नहीं बल्कि मेज़ लगाना और बैठने का प्रबन्ध करने का निर्णय भी शामिल था (यीशु के पास कौन बैठेगा आदि)। [5]उस ज़माने में घरों में आम तौर पर अन्दर दरवाज़े नहीं होते थे। यदि बीच में दरवाज़ा था भी, जहां मारथा थी और जहां यीशु था, तो यह खुला ही होगा। [6]प्रवचन में इसका इस्तेमाल करते हुए, मैं थोड़ी सी हंसी मिला लेता हूं: ''हमारे साथ ऐसा कभी नहीं होता, या होता है ? ... मेरे प्रचार करते हुए, आप हर शब्द को टांग दें ... और आप का मन इस या उस समस्या में नहीं भटकेगा ... दोपहर को क्या खाना है। ...'' [7]व्यक्तिगत तौर पर ज़ोर देने के लिए मैं प्राय: इसी का इस्तेमाल करता हूं। [8]कई स्त्रियां मारथा के जैसी हैं। वे मुझे बताती हैं कि ''आप पुरुष लोग समझते नहीं हो। चाहें या न चाहें हमें कुछ काम करने ही पड़ते हैं!'' [9]यदि यह सब एक कमरे वाले घर में हो रहा था (अधिक सम्भावना यही है) तो मारथा कितनी गड़बड़ कर रही थी! [10]एक प्रवचन में मैंने ''*आपके* नहीं बल्कि *उसके* सम्बन्धी'' शब्दों से यहां एक और हंसाने वाली बात जोड़ी थी।

[11]''क्या यीशु को परवाह है ?'' इस पाठ से पहले या बाद में गाने के लिए अच्छा गीत है। [12]''चूर-चूर हो जाना'' निराशा के ऊपरी स्तर को दर्शाने के लिए इस्तेमाल किया गया है। [13]कई प्रासंगिकताएं बनाई जा सकती हैं। मारथा की तरह हम सब समय-समय पर उन बातों के लिए अधिक चिन्तित हो जाते हैं, जो वास्तव में पूरी नहीं होती। जबकि जो आवश्यक होता है उसकी उपेक्षा करते हैं। *अपने* सुनने वालों और/या *अपनी* आवश्यकतानुसार प्रासंगिकता बनाएं। [14]निमन्त्रण में आप कह सकते हैं, ''बपतिस्मा लेने का यह *अच्छा* दिन ... या वापस आने का *अच्छा* दिन'' है।